



परिवारिक बजट में भारतीय महिलाओं की भूमिका

डॉ. बंदना श्रीवास्तव

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

Corresponding Author: डॉ. बंदना श्रीवास्तव

DOI - 10.5281/zenodo.14523255

परिचय:

वास्तव में बजट एक वित्तीय योजना है। जो किसी निश्चित समय सीमा के लिये अनुमानित आय और व्यय का विवरण देती है। यह वित्तीय प्रबंधन संसाधन आबंटन और लक्ष्य प्राप्त के लिये मार्गदर्शन करता है बजट बनाने का मकसद अपने खर्चों को कम करना नहीं होता बल्कि अपने फाइनेंस को बेहतर तरीके से मैनेज करना होता है।

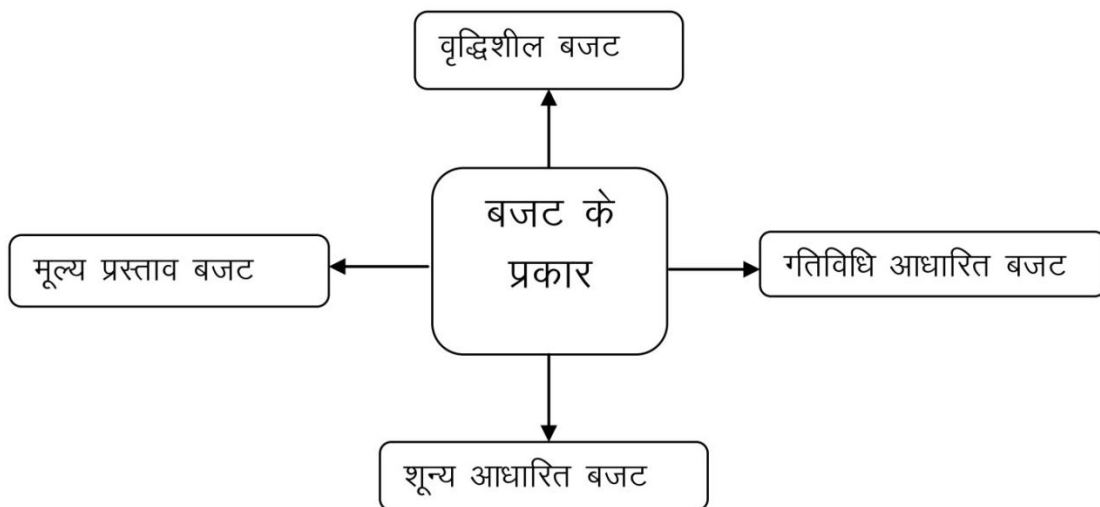
दूसरे शब्दों में यह एक वित्तीय खाका के रूप में कार्य करता है जो एक निश्चित समय सीमा आमतौर पर मासिक या वार्षिक पर अनुमानित आय

और व्यय का विवरण देता है। यह वित्तीय प्रबंधन संसाधन आवंटन और लक्ष्य प्राप्ति के लिये मार्गदर्शन प्रदान करता है।

अतः इस प्रकार बजट एक विवरण है जो यह ब्योरा देता है कि पैसा कहा से आता है। और पैसा कहाँ जाता है। तकनीकी शब्दों में जो धन आता है उसे आय, राजस्व, प्राप्तिया अदि जैसे शब्दों से संदर्भित किया जाता है और जो धन बाहर जाता है उसे व्यय खर्च आदि के रूप में संदर्भित किया जाता है। बजट शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम १७३३ में सर रॉबर्ट वालपोल ने किया था।

बजट के प्रकार:

जहाँ तक बजट के प्रकार की बात है तो यह वास्तव में चार प्रकार के होते हैं:-



१. **वृद्धिशील बजट-** वृद्धिशील बजट सभी लागतों के लिये गतिविधी स्तरों में परिवर्तन के लिये समाभाजित करता है जिसमें स्थिर और परिवर्तनीय दोनों लागतें शामिल है।
२. **मूल्य प्रस्ताव बजट-** यह एक बजट बनाने की विधि है जिसका मकसद किसी उत्पाद या सेवा के लिये वित्तीय संसाधनों को इस तरह से आवरित करना होता है कि ग्राहक को सबसे ज्यादा वैल्यू मिले। इसे प्राथमिकता आधारित बजट भी कहा जाता है।
३. **गतिविधी आधारित बजट-** यह बजट एक पद्धती है जिसमें गतिविधियों का पूरी तरह से विश्लेषण किया जाता है ताकि लागत का अनुमान लगाया जा सके और एक बजट निर्धारित किया जा सके।
४. **शून्य आधारित बजट-** शून्य-आधारित बजट एक बजट प्रक्रिया है जिसमें बजट को शून्य से शुरू करके तैयार किय जाता है यह पारंपरिक बजटिंग से अलग है जो पिछले बजट पर आधारित होता है 2BB में हर खर्च को न्यायसंगत करना होता है और उसे वास्तविक बजट में जोड़ने से पहले सोचना होता है।

पारिवारिक बजट के उद्देश्य:

पारिवार को चलाने के लिये बजट का अपना प्रमुख कार्य एवं उद्देश्य होता है जो की निम्न लिखित है:-

१. अपने खर्च को नियंत्रित करना और वित्तीय तथ्यों को हासिल करना।
२. अपने वित पर नियंत्रण रखना।
३. बचत करना और अप्रत्याशित खर्चों के लिये तैयार रहना।
४. आंतरिक और वित्तीय अनुशासन का निर्माण करना।

पारिवारिक बजट के लाभ:

पारिवारिक बजट प्रायः महिलाओं के द्वारा भी बनाया जाता है अतः पारिवारिक बजट के निम्नलिखित लाभ है:-

१. वित्तीय लाभ
२. वित्तीय जॉच में सहायक
३. आय और व्यय का ब्योरा
४. वित्तीय लक्ष्य की प्राप्ति का माध्यम
५. बचत और श्रण के बारे में जागरूक बनाना।
६. खर्च पर नियंत्रण
७. भविष्य के लिये बचत
८. जोखिमपूर्ण खर्च की आदतों में कमी।
९. दीर्घ कालीक वित्तीय लक्ष्य निर्धारण।
१०. शेड्यूल प्रोजेक्ट बजटिंग।

पारिवारिक बजट में भारतीय महिलाओं की भूमिका:

आमतौर पर महिला परिवार की आय के विनम्र प्रबंधक के रूप में कार्य करती है। खर्च किये गये प्रत्येक पैसे से अधिकतम लाभ सुनिश्चित करना उसकी जिम्मेदारी है। वह हमेशा घाटे के बजट करना पसंद करती है। पैसे खर्च करते समय वह हानि और लाभ का विशेष ध्यान रखती है।

वास्तव में महिलयें परिवारों और समुदायों की रीढ़ है। वे अपने परिवारों की देखभाल, सहायता और पोषण प्रदान करती हैं। और बच्चों के विकास के लिये आवश्यक है। महिलायें समुदाय निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और अक्सर सामुदायिक संगठनों में नेतृत्व की भूमिका निभाती है।

जहाँ तक पारिवारिक बजट में महिलाओं की भूमिका का प्रश्न है उसे हम निम्नलिखित आँकड़ों से स्पष्ट कर सकते हैं:-

बजट में व्यय किये जाने वाले प्रमुख मदों के क्रम के प्रति उतरदातियों का दृष्टिकोण:-

प्रमुख मद	शिक्षित कामकाजी महिलाओं का बजट	शिक्षित गैर कामकाजी महिलायें
१. भोजन	८५ (५४.६६)	८० (५३.३३)
२. वस्त्र	२७ (१८.००)	३० (२०.००)
३. मकान	१८ (१२.००)	१७ (११.७३)
४. प्रकाशन इंजन	१७ (४.००)	९ (६.००)
५. शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि	१४ (११.३३)	१४ (११.३३)
योग	१५० (१००)	१५० (१००)

बजट में आकस्मिक व्यय सम्मिलित रहने में पारिवारिक बजट में महिलाओं का दृष्टिकोण:-

दृष्टिकोण	शिक्षित कामकाजी महिलायें	शिक्षित गैर कामकाजी महिलायें	योग
हाँ	११५ (७६.६६)	११० (७३.३३)	२२५ (७५.००)
नहीं	३५ (२३.३४)	४० (२६.६७)	७५ (२५.००)
योग	१५० (१००)	१५० (१००)	३०० (१००)

निष्कर्ष:

अतः इस प्रकार उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है की पारिवारिक अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चनाने के लिये महिलाओं में अपार क्षमता एवं निर्णायक भूमिका होती है। महिलायें किसी भी पारिवारिक अर्थव्यवस्था की मुख्य आधार एवं रीढ़ होती है। वे परिवार की मदों का बहुतायत मात्रा में स्यौरा था ऑकड़ो को बनाकर मदों को विभिन्न क्षेत्रों में किस प्रकार खर्च करेंगी इसकी निर्णायक क्षमता में अहम भूमिका को निभाती है। यह प्रश्न आवश्यक है की इस क्रम में उनका शिक्षित होना इस संदर्भ में बहुतायत मात्रा में आवश्यक है तभी हम इस अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में समय हो सकेंगे।

संदर्भ सूची:

१. ढींगरा ओ. पी. “वीमन इन एम्प्लायमेण्ट” रिपोर्ट।
२. देसाई नीरा ए. “वीमन इन मार्डन इंडिया” प्रा. लि. 1957।
३. मसानी, मेहरा “वीमन एट वर्क” पोजिशन्स ऑफ वीमन इन इण्डिया बम्बई।
४. झा. प्रेम शंकर “वर्किंग वीमन नो फयुचर फेमिना” 27 अक्टुबर 1972।
५. अनेजा राजेन्द्र के “ओपन द डोर्स ऑफ अपॉरयूनिये” ईक्स वीकसी 5 मई 1973।